वाक्यगत अशुद्धि के अन्य कारण –

(1) संज्ञा सम्बन्धी अशुद्धि –

मैं सोमवार के दिन व्रत रखता हूँ। (×)

मैं सोमवार को व्रत रखता हूँ।

→ अनावश्यक पद

आज आसमान की ऊँचाई में बादल है।

आज आसमान में बादल है।

→ अनावश्यक पद

वह पशु क्यों रेंकते हैं।
गधा क्यों रेंकता है। > अनुपयुक्त पद

पंडित जी ने कहा कि शुभ कार्य में संकट भी आते हैं।
पंडित जी ने कहा कि शुभ कार्य में बाधाएँ भी आती हैं। > ,,

'भारतीय नारी' नामक शीर्षक निबंध अच्छा है।
'भारतीय नारी' शीर्षक निबंध अच्छा है। > अनावश्यक पद

परीक्षा बीस तारीख के दिन होगी।
परीक्षा बीस तारीख को होगी।
> अनावश्यक पद

भूमिहीन कृषक रामसहारे जीता है।
भूमिहीन कृषक रामभरोसे जीता है।

विजय को सफल होने की निराशा है।
विजय को सफल होने की आशा है।
> अनुपयुक्त पद

(2) सर्वनाम सम्बन्धी अशुद्धि –

वह उसके गाँव से आज ही आया है।

वह अपने गाँव से आज ही आया है।

उसने जल्दी घर जाना था।

उसे जल्दी घर जाना था।

तेरे को यहाँ किसने बुलाया।

तुझको यहाँ किसने बुलाया।

यह पुष्प इसकी सुगंध से महक रहा है।

यह पुष्प अपनी सुगंध से महक रहा है।

वह लोग जा रहे हैं।

वे लोग जा रहे हैं।

मेरे को आज दिल्ली जाना है।

मुझे आज दिल्ली जाना है।

③ विशेषण से सम्बन्धित अशुद्धि –

नीला आकाश अति स्वच्छ है।

आकाश अति स्वच्छ है।

मैं कल सारी रात भर जागता रहा।

मैं सारी रात / रातभर जागता रहा।

हाथी दीर्घकाय पशु है।

हाथी विशालकाय पशु है।

तुम लोग अपना लेख लिखो।

तुम लोग अपना-अपना लेख लिखो।

तुम लोग अपनी रजाइयाँ लेकर आना।

तुम लोग अपनी-अपनी रजाई लेकर आना।

अब मँहगाई भारी मात्रा में बढ़ रही है।

अब मँहगाई बहुत बढ़ गई है।